मर्यादा

लेखक परिचय

विष्णु प्रभाकर

श्री विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून सन् 1912 ई. को ग्राम-मीरनपुर, मुजफ्फर नगर उत्तरप्रदेश में हुआ। श्री विष्णु प्रभाकर मानवतावादी एकांकीकार हैं। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों मेंआपके साहित्य की मूलात्मा, आपका सहज मानव गुण है। इन्होंने यथार्थ के धरातल पर आदर्श की अवतारणा की है। मानव प्रवृत्तियों का विश्लेषण करके उनमें आध्यात्मिक पुट देना आपकी अपनी विशेषता है। इनकी एकांकियों में मध्यवर्गीय समाज की विभिन्न रुचियों, संस्कारों, भावनाओं और विचारधाराओं का मार्मिक चित्रण हुआ है।

श्री विष्णु प्रभाकर के एकांकियों को मुख्यत: छह भागों में बाँटा जा सकता है- (1) सामाजिक समस्या-प्रधान एकांकी इन एकांकियों में वर्तमान सामाजिक जटिलताओं पर प्रकाश डाला गया हैं। यथा 'बन्धन मुक्त पाप', 'प्रतिशोध','इन्सान', 'वीर-पूजा' 'देवताओं की घाटी', 'दूर और पास' आदि। (2) मनोवैज्ञानिक एकांकी- इन एकांकियों में पात्रों की अंत: प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। यथा 'भावना और संस्कार', 'ममता का विष', मैं दोषी नहीं हूँ, 'जज का फैसला', 'हत्या के बाद', 'माँ-बाप' आदि (3) राजनीतिक एकांकी-इन एकांकियों में देश की राजनीतिक उथल-पुथल राष्ट्रीय गौरव और स्वाधीनता संग्राम के विभिन्न चित्र खींचे गये हैं। यथा-'हमारा

केन्द्रीय भाव:- 'मर्यादा' एकांकी की कथावस्तु में बिखरे हुए एक संयुक्त परिवार का चित्रण है। जगदीश एकांकी का प्रमुख पात्र और टूटे हुए संयुक्त परिवार का मुखिया है। उसके तीनों भाई प्रदीप, विनय एवं अशोक अपने-अपने स्वार्थों और सुविधाओं के चलते उससे अलग हो गये हैं। हर भाई सोचता है कि दूसरे भाइयों की अपेक्षा वह परिवार के लिए अधिक करता है। जगदीश भी कहीं अपने आप को भी इस अलगाव के लिए दोषी मानता है। संयुक्त परिवार के बिखरने का सबसे अधिक दुष्प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इस वजह से वे संयुक्त परिवार के सामूहिक स्नेह तथा देखभाल से वंचित हो जाते हैं। सुमन और अनिल इस बात के उदाहरण हैं। जगदीश को अपनी सूझ-बूझ का कुछ घमंड है पर अपने भाइयों की अपेक्षा उसके मन में प्रेम और उदारता का भाव अधिक है। इसीलिए वह उनकी भूलों को क्षमा कर उन्हें पुन: एक होने का अवसर देता है। वह जानता है कि आज रामायण और महाभारत का युग नहीं है। पुरानी मर्यादाएँ क्षीण हो रही है। आज संयुक्त परिवार मात्र किसी एक व्यक्ति के त्याग-तपस्या, समर्पण, प्रभाव या आतंक पर टिके नहीं रह सकते। संयुक्त परिवार को सभी घटकों की सुख सुविधाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति का पर्याय बनाना होगा। उसके लिए नई मर्यादाएँ स्थापित करनी होगीं। निस्वार्थ प्रेम और स्वार्थमय इच्छाओं आवश्यकताओं के बीच उचित सामंजस्य स्थापित करके ही संयुक्त परिवार को बनाए रखा जा सकता है। कठिनाई के समय सहयोग की भावना का होना अधिक महत्वपूर्ण है।

पात्र परिचय

जगदीश-परिवार का मुखिया-बड़ा भाई

मालती-जगदीश की पत्नी

प्रदीप- सबसे छोटा भाई

सुमन- प्रदीप की बेटी

रीता-मँझले भाई विनय की पत्नी

(प्रारम्भिक संगीत के बाद प्रभात का सूचना-सूचक संगीत, उसी में से पहरूए की आवाज उठती है, दूर से पास आती हुई।)

पहरूआ- बाबूजी.....(दूर द्वार पर खड़े-खड़े)

बाबूजी..... पाँच बज गए (दूर जाता स्वर)बाबूजी.....स्वर मिटते ही विद्रोह के स्वर उठते हैं। वे स्वप्न के स्वर हैं, जैसे दूर

स्वाधीनता संग्राम' (4) हास्य व्यंग्य प्रधान एकांकी–इनमें कई प्रहसन रखे जा सकते हैं–यथा 'प्रो. लाल,' 'मूर्ख', 'पुस्तककीट', 'कार्यक्रम', आदि। (5) पौराणिक–ऐतिहासिक एकांकी–इनमें पुराण इतिहास को माध्यम बनाकर वर्तमान को प्रेरणा दी गई है। (6) प्रचारात्मक एकांकी–इनमें देश की सामयिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं पर गांधीवादी दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है। यथा– 'पंचायत','नया काश्मीर', 'सर्वोदय' 'राजस्थान', स्वतंत्रता का अर्थ, 'समाज सेवा' आदि।

रेडियो रूपक लिखने में भी एकांकीकार को पर्याप्त सफलता मिली है। भाषा सरल, परिष्कृत और प्रभावपूर्ण है। कथोपकथन पात्रानुकूल एवं भावानुकूल हैं। इनके निम्नलिखित एकांकी संग्रह उल्लेखनीय हैं–

1. 'स्वाधीनता संग्राम', 2.'सरकारी नौकरी', 3. 'इन्सान' 4. 'संघर्ष के बाद', 5. 'प्रकाश और परछाई,' 6. 'गीत और गोली', 7. 'बारह एकांकी' आदि।

देश से उठ रहे हों।

1. **स्वर** – मैं अब किसी भी शर्त पर साथ नहीं रह सकता। नहीं, नहीं! मैं गुलाम नहीं बन सकता! मुझे अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है, मुझे अपने मन को मारना पड़ता है.....

2. **स्वर**– मेरे पति सबसे अधिक कमाते हैं। मेरे परिवार पर सबसे कम खर्च होता है। दूसरे मजे करते हैं। नहीं, नहीं! मैं अब एक क्षण भी यहाँ नहीं रहूँगी.....

3. **स्वर**– तो मैं भी न रहूँगा अधिक कमाने से क्या होता है, घर का सारा प्रबंध तो मैं ही करता हूँ। मैं न हूँ, तो सब तीन तेरह हो जाय। संभालो, मैं चला!

4. **स्वर**– वाह! एक को कमाने का घमण्ड है, दूसरे को परिश्रम का, तीसरे को डॉक्टरी का, पर यह कोई जानता कि यह घर मेरी सूझ–बूझ, मेरे प्रभाव के कारण चल रहा है। दूर–दूर तक मेरी पहुँच है। बड़े से बड़ा काम मैं देखते–देखते कर लेता हूँ.....

(ये स्वर तीव्र होते हैं तथा शीघ्रता से बोलते हैं)

मैं डॉक्टर हूँ.....मेरे पति बड़े वकील हैं....मैं प्रबन्ध करता हूँ.....मैं प्रभावशाली हूँ। नहीं, मैं साथ नहीं रहूँगा। नहीं, अभी, अभी। नहीं.....नहीं.....(मैं के स्वर तीव्रता से उठते हैं।)

जगदीश–(तीव्रता से) बन्द करो, चुप हो जाओ, मैं एक को भी नहीं जाने दूँगा। अभी नहीं जाने दूँगा, देखूँगा, कैसे कोई घर से दूर जाता है.... कैसे?

मालती–(दूर से घबराए हुए आती है) क्या बात है, क्या हुआ? (पास आकर) क्या है जी?

जगदीश–(जागकर हैरानी से) कौन मालो। तुम!

मालती – हाँ शायद आप सपना देख रहे थे। यह आपको क्या हुआ है रोज–रोज सपने क्यों देखते हैं? (नि:श्वास) कई महीने बीत गए अब उनके बारे में सोचने से क्या लाभ?

जगदीश– कुछ लाभ नहीं, सोचना भी नहीं चाहता। सोचता भी नहीं, पर कभी–कभी सपने आ ही जाते हैं।

मालती– (हँसकर) यूँ ही आ जाते हैं। मैं कहती हूँ कब तक ठगते रहोगे अपने आप को? सपने का, सोचने से जैसे कोई सम्बन्ध ही नहीं है। जैसे बिना सोचे ही सपने आ जाते हैं, मैं पूछती हूँ.....

जगदीश –(क्रोध से) मालती.....

मालती– कितना ही कठोर बनने की कोशिश करो, कितना ही निर्मम बनो, पर मैं जानती हूँ.....

जगदीश – (क्रोध से) तुम क्या जानती हो?

मालती – यही कि आपका दिल रोता हैं

जगदीश– (नि:श्वास) मालो.....

मालती – क्यों चुप हो गए?

जगदीश– इसलिए कि दिल सचमुच रोता है, आज तो खास तौर पर रोता है।

मालती– आज खासतौर पर क्यों?

जगदीश– (धीरे से) मालो, आज सपने में मैंने अपनी आवाज सुन ली। वह आवाज बड़ी डरावनी थी।

मालती– (अचरज से) अपनी आवाज डरावनी आवाज। मैं समझी नहीं कि आप क्या कहना चाहते है?

जगदीश– कहना चाहता हूँ कि अब तक मैं समझता था कि मेरे सब भाई अलग होना चाहते थे, परन्तु मैं नहीं चाहता था।

मालती – तो इसमें गलत क्या हैं?

जगदीश– नहीं, नहीं! यह गलत है, झूठ है।

मालती– झूठ है।

जगदीश– हाँ, झूठ है बिल्कुल झूठ! अभी–अभी सपने में मैंने अपनी आवाज सुनी–(स्वप्न वाली आवाज) वाह! एक को कमाने का घमण्ड है, दूसरे को परिश्रम करने का, तीसरे को डॉक्टरी का, पर यह कोई नहीं जानता कि यह घर मेरी सूझ–बूझ, मेरे प्रभाव के कारण ही चल रहा है। दूर–दूर तक मेरी पहुँच है। बड़े से बड़ा काम मैं देखते–देखते करा लेता हूँ। मैं प्रभावशाली हूँ.....नहीं, नहीं मैं भी साथ नहीं रहूँगा, नहीं नहीं.....नहीं.... नहीं.....(समाप्त) मैंने यह आवाज सुनी, यह आवाज मेरी है।

मालती– है, तो इसमें झूठ क्या है? मैं बराबर कहती रही हूँ कि घर न कोरे धन से चलता है, न कोरे परिश्रम से। घर चलता है, सूझ–बूझ से अक्ल से....।

जगदीश – और वह सब मुझ में है। (जोर से हँसता है) स्वार्थी .....सब स्वार्थी .....सब अपने गुण देखते हैं। सब अपना भला सोचते है, लेकिन .....(एकदम)लेकिन जाने दो, जो हुआ अच्छा हुआ यही होना चाहिए था। आज के युग में कौन किसको बाँध कर रख सकता है? वह जमाने लद गए, जब एक का हुक्म चलता था। जब सब अपने मन को मारते थे....

मालती– अपना मन मारते नहीं थे, दूसरों का मन रखते थे। वे अपने लिए नहीं दूसरों के लिए, कुटुम्ब के लिए जीते थे। कुटुम्ब उनके लिए सब कुछ था। कुटुम्ब की आन उनकी आन थी।

जगदीश– आन वान जाने दो, बातों को जाने दो, जाकर अपनी रामायण पढ़ो...

मालती– वह तो पढ़ चुकी!

जगदीश– कहाँ? मैंने तो आवाज नहीं सुनी।

मालती– आवाज अब किसे सुनाती? अपने लिए पढ़नी थी, मन में पढ़ ली, खाना भी बना लिया है.....

जगदीश– बना लिया? (एकदम) हाँ, ठीक तो है (हँसकर) देख लो कितना शोर रहता था, अब कितनी जल्दी काम निपट जाता है। कितना अच्छा है!

(सुमन का पुकारते हुए आना)

सुमन– ताऊजी ....ताऊजी.....

जगदीश– कौन सुमन? सुमन इतने सवेरे.....

सुमन– ताऊजी, मैं रामायण सुनूँगी।

मालती– अरे तू रामायण सुनने आई, इतनी दूर से? वाह री मेरी भक्तिन (हँसती है)।

जगदीश– (हँसते हुए) पगली, अरे आज तुझे क्या सूझी? सवेरे इतनी दूर भाग कर आई! एक रामायण मँगवा लेती।

सुमन– मैं तो रोज कहती थी, पर पापा ने लाकर नहीं दी। कहते थे, तू पढ़ेगी रामायण, भाग यहाँ से.....

जगदीश – और तुम भाग आई!

सुमन– मुझे भगा दिया। पापा बहुत बुरे हैं हमें कुछ नहीं लाकर देते। ताऊजी मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगी।

जगदीश– नहीं जाएगी ?

हाँ, नहीं जाऊँगी।

मालती– पगली, चल तुझे रामायण सुनाऊँ। नहीं जाएगी तो कहाँ रहेगी?

सुमन – यहीं रहूँगी। वहाँ नहीं जाऊँगी। तुमने मुझे क्यों निकाला? क्यों?

(रो पड़ती है)

जगदीश – अरे, अरे, सुमन.....बेटी सुमन.....

मालती – अरे, अरे, तू रोती क्यों है?

सुमन – (पूर्वत:) आपने मुझे क्यों निकाला? क्यों? मैं नहीं जाऊँगी। मैं पापा–मम्मी के पास नहीं जाऊँगी?

जगदीश – हाँ,हाँ, जा। जा तू रामायण सुन, मैं तेरे बाप के पास जाता हूँ। वाह! बच्चे को इस तरह डाँटते हैं। क्या समझा है उसने। समझ लिया कि अलग हो गए तो जैसे मैं मर गया। कोई बात है..... वाह.... वा...

प्रदीप – भाई साहब! भाई साहब।

जगदीश– कौन प्रदीप? तू यहीं आ गया मैं तो तेरे पास ही आ रहा था।

प्रदीप– (पास आकर) क्यों? आप क्यों जा रहे थे? क्या आप के पास भी चिट्ठी आई है।

जगदीश – मेरे पास किसी की चिट्ठी नहीं आई। मेरे पास सुमन आई है, मैं कहता हूँ कि तुम लोगों ने समझा क्या है? तुम लोगों ने अलग होना चाहा, मैंने कोई आपत्ति नहीं की। तुम बच्चों को भी एक दूसरे का दुश्मन बना दो। मैं पूछता हूँ कि तुमने सुमन को क्यों मारा?.... यहाँ क्यों नहीं आने दिया?

(पृष्ठभूमि में रामायण का पाठ चलता है)

सरल सुभाय माँय हित लाए।

अति हित मनहुँ राम फिरि आए ।।

भेंटेउ बहुरि लखन लघु भाई।

सोकु सनेहु न हृदय समाई॥

प्रदीप – भाई साहब, मैं क्या बताऊँ .....(एकदम) आप उसे यहीं रख लीजिए वह आपके बिना नहीं रह सकती।

जगदीश – और तुम्हे इस बात से दु:ख होता है। तुम उसे लेने आए तो, तुमने समझा क्या है? ले जाओ अपनी बेटी को! अभी ले जाओ!.....सुमन ....सुमन इधर आओ ।

प्रदीप – भाई साहब!

मालती– (आकर) क्या है, क्या कहते हो सुमन को। ओ, प्रदीप है? तुम सुमन को लेने आये हो शायद?

सुमन– मैं नहीं जाऊँगी मैं बिलकुल नहीं जाऊँगी। (अन्दर भाग जाती है)।

प्रदीप – भाई साहब मेरी तो सुनते नहीं मैं सुमन को लेने नहीं आया । उसे आप ही रखें, मुझे खुशी होगी। इन बच्चों की माँगों से तंग आ गया हूँ (गला भर आता है) मेरे पास पैसे कहाँ से हैं? पेट भरने लायक भी तो नहीं कमाता हूँ.....

जगदीश– और जैसे मैंने कुबेर का कोष इकट्ठा कर रखा है। मैं तो अपने आप ही रवि की पढ़ाई का खर्च नहीं दे पाता। वाह वा, अशोक और विनय डॉक्टर और वकील क्या थे, समझते थे, कि जैसे वे कमाते हैं, और हम खर्च करते हैं। अब जोड़ लें वे कारूँ का खजाना? मैं माँगने नहीं जाऊँगा..... !

प्रदीप – माँगना तो मैं भी नहीं चाहता भाई साहब! माँगू भी तो किस मुँह से? अकड़कर गया था, पर ....खैर जाने दो उन बातों को। डॉक्टर भईया का पत्र आया है।

जगदीश– किसका, विनय का पत्र आया है, तुम्हारे पास?

प्रदीप – जी हाँ, मेरे पास आया है, पर है आपके लिए!

मालती – क्यों इन्हें सीधे लिखते शर्म आती थी, या अब ये इतने छोटे हो गए कि .....

जगदीश – (तेजी से एकदम) मालती! तुम मत बोलो।

मालती– मैं क्यों न बोलूँ? सबसे पहले यही तो घर छोड़कर गया था डॉक्टरी के जोश में इसी ने तो मेरी बगिया को उजाड़ा, इसी ने ...

जगदीश – (एकदम) मालो....मालो ....तू मेरी दुखती रग न दुखा। उसका कोई अपराध नहीं है। आज के जमाने में लोग भेड़ बकरी नहीं है, उनके दिमाग है, वे सोचते हैं,.....समझते हैं। वे अपने पर निर्भर रहना चाहते हैं। दूसरों का सहारा लेना नहीं चाहते! .....हाँ प्रदीप! क्या लिखा है, विनय ने?

प्रदीप – उन्हें वजीफा मिल गया है।

जगदीश – वह तो मुझे मालूम है। तीन वर्ष के लिए वह अमेरिका जा रहा है।

मालती – हाँ, जरूरत पड़ी तो वह दो वर्ष और भी रह सकता है।

प्रदीप– भइया ! आप तो कहते हैं कि डॉक्टर भइया ने आपको कोई पत्र नहीं लिखा।

जगदीश – क्या तुम समझते ही कि वह लिखेगा, तभी मुझे पता लगेगा। वाह, तुमने समझा क्या हैं? बता सकता हूँ उसने तुम्हें क्या लिखा है? उसने लिखा है कि वह अपनी बहू और बच्चों को यहाँ छोड़कर जाना चाहता है। नहीं लिखा?

प्रदीप – लिखा तो यही है।

जगदीश – लिखा तो यही है (हँसता है) प्रदीप, उसे लिख दो कि वह निश्चिन्त होकर अमेरिका जाए। उसकी बहू और बच्चे मेरे पास रहेंगे।

प्रदीप – भइया!

मालती – क्या कहते हो? विनय के बहू–बच्चे यहाँ रहेगे?

जगदीश – और कहाँ रहेंगे.... तुम सोच में क्यों पड़ गए प्रदीप?

प्रदीप – जी,जी, नहीं। लिख दूँगा, पर .....

जगदीश– पर तुम कहना चाहते हो कि तुम्हारा गुजारा भी नहीं चलता तुम्हारा कुछ.....

प्रदीप– भइया, मैं क्या कहूँ, शर्म आती है।

जगदीश– शर्म आती है। वाह–वा, शर्म भी क्या पुरुषों का आभूषण है? अरे पागल, यह बड़ा अच्छा अवसर है तीन वर्ष के लिए तू भी यहाँ आ जा। आखिर उनकी देखभाल तो कोई करेगा ही। (हँसता है)फिर क्यों न .....

प्रदीप– (एकदम) भैया, आप तो हँसी करते हैं।

जगदीश – (जोर से हँसता है) सभी बड़े काम हँसी में आरंभ होते हैं। लेकिन खैर, तू नहीं आना चाहता तो न आ। पर सुमन अब मेरे पास रहेगी। चाहता है तो प्रकाश को भी भेज दे। क्यों सुमन रहेगी न? अरे कहाँ गई, ओह! रामायण सुन रही है।

(रामायण का स्वर स्पष्ट होता है)

मालती – कहत सप्रेम नाइ महि माथा। भरत प्रनाम करत रघुनाथा॥

उठे राम सुनि प्रेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनुतीरा॥

बरबस लिए उठाय उर,लाय कृपा निधान।

भरत राम की मिलनि लखि, बिसरे सबहि अपान।।

मिलन प्रीति किमि जाय बखानी। कवि कुल अगम करम मन बानी।।

परम प्रेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति बिसराई ।।

जगदीश– (निश्चयपूर्वक) रामायण मनुष्य की मर्यादाओं की मंजूषा। लेकिन आज रामायण का युग नहीं है। आज महाभारत का युग भी नहीं है, जब जड़ मर्यादाएँ तोड़ी गई थीं। आज तो मर्यादाओं को फिर से पहचानना है। फिर से .....

(रीता का तेजी से प्रवेश)

रीता– (दूर से) भाभीजी, भाभीजी!

जगदीश – कौन?

प्रदीप – यह तो अशोक की बहू की आवाज है।

रीता – (पास आकर) भाभीजी कहाँ है?

जगदीश – क्यों क्या बात है बहू? कैसे आई? तुम घबरा क्यों रही हो ?

मालती – (आती हुई) कौन, कौन घबरा रही है? रीता .....तुम ..... (गम्भीर स्वर में) क्या बात है?

रीता– (अवरूद्ध कंठ) भाभी, परसों अनिल छत से गिर पड़ा था।

प्रदीप व जगदीश – (घबराकर एक साथ) अनिल छत से गिर पड़ा? क्या कहती हो? अब तक बताया भी नहीं?

जगदीश – अरे बताओ न? अब उसका क्या हाल है?

रीता – हाल अच्छा नहीं है। भाई साहब, पैर की हड्डी टूट गई है। ढाई महीने प्लास्टर में रहेगा।

जगदीश – (खोया–खोया) अनिल का पैर टूट गया। मुझे पता तक नहीं (एकदम) वाह वा। तुमने समझा क्या है। मुझे जीते जी मार दिया।

रीता– भाई साहब वह परसों से आपको और अपने ताऊजी को पुकार रहा है। किसी की नहीं सुनता।

प्रदीप – और तुम उसे भुलाना चाहते हो। तुमने कहलवाया तक नहीं मैं अभी जाता हूँ ।

जगदीश – कहाँ जाता है इधर बैठ। (एकदम) लेकिन नहीं मैं भूल गया था। मैं किसी को रोकने वाला कौन? जा भाई,

मैं तो जीते जी मर गया .....

मालती – मरें तुम्हारे दुश्मन, ऐसा क्यों बोलते हो?

जगदीश – बोलने के सिवा और मेरे पास रहा है क्या है? अनिल मुझे पुकारता रहा, और उसकी आवाज मुझ तक पहुँचने ही नहीं दी गई। यह सब क्या हो गया? अलग होते ही हम सब दुश्मन हो गए।

रीता– भाई साहब! बात यह नहीं है, हम उसे अस्पताल ले गए थे। उन्हें तो आप जानते ही हैं कि एक क्षण की भी फुरसत नहीं मिलती। मुझे तो सभा सोसाइटियों का काम रहता है।.....

मालती – (एकदम) माँ को सभा –सोसाइटियों का काम रहता है। बाप को पैसा कमाने से फुरसत नहीं। तब औलाद की कौन देखभाल करे? भला, चार वर्ष का बच्चा, बिना अपनों के अस्पताल में कैसे रह सकता है?

रीता– यही तो बात है, रो–रोकर परेशान कर रहा है।

जगदीश – तो मैं क्या करूँ ?

रीता – कैसे कहूँ? आप उसके पास चलें और .....

जगदीश – और अस्पताल में रहें.....

रीता – नहीं नहीं, आप उसे.....

जगदीश – यहाँ ले आएँ। नहीं यह नहीं हो सकता। कुछ नहीं हो सकता मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम जानों तुम्हारा काम जाने। तुम स्वतंत्र हो। आत्म–निर्भर हो। दूसरों का सहारा क्यों लेते हो? दुर्बल हो जाओगे। जाओ!

रीता – भाई साहब!

जगदीश – भाई साहब! कौन भाई साहब? किसका भाई साहब! भाई साहब होता तो परसों ही मैं अनिल के पास होता। तुम तो सबसे अधिक कमाते हो, जाओ बच्चों को घर लाओ, एक नर्स रखो। एक नौकर रखो.....

रीता – नर्स भी है, और नौकर भी है पर .....

जगदीश – पर, माँ–बाप को फुरसत नहीं है कि बेटे के पास बैठें। आज के युग में जरूरत भी क्या है?

मालती – अब बस भी करो। प्रदीप, चल मैं चल रही हूँ। इन्हें बहकने दे। मैं अनिल को यहाँ लेकर आती हूँ। देखती हूँ मुझे कौन रोकता है ?

जगदीश – मैं रोक सकता हूँ, घर मेरा है!

मालती – घर तो तब भी तुम्हारा था, जब बाँट–बखेरा हुआ था। किसी को रोक सके।

जगदीश – मालो!

मालती – चलो, प्रदीप!

प्रदीप – चलो बहू! भाई साहब स्वयं उसे यहाँ लाना चाहते हैं। यह तो बनावटी क्रोध है!

रीता – (दूर जाते हुए) जानती हूँ। इन तीन दिनों में बहुत कुछ जान गई हूँ। जान गई हूँ कि पैसा सब कुछ नहीं हैं।

प्रदीप – (दूर से) ठीक कहती हो, बहू, कोई भी वस्तु अपने आप में सब कुछ नहीं है। (दूर जाते शब्द)

जगदीश – गए (हँसते हैं) वे भी समझते हैं।

सुमन – ताऊजी क्या अनिल यहाँ आएगा ?

जगदीश– (पूर्वतः) हाँ ।

सुमन – उसके चोट लग गई हैं।

जगदीश – हाँ! तू उसे प्यार करेगी न?

सुमन– मैं उसे बहुत प्यार करूँगी, वह बहुत अच्छा है।

जगदीश – और प्रकाश, मीना, मंजू, किशोर और इलाहाबाद वाली ताई और सुबीर, पप्पू, कुणाल, ये सब अच्छे नहीं हैं? इन्हें तू प्यार नहीं करेगी?

सुमन– क्या ये सब भी आयेंगे यहाँ.....?

जगदीश –हाँ, यहीं.....

सुमन – फिर कभी नहीं जाएँगे?

जगदीश – नहीं!

सुमन – अहा जी, अहा जी! तब तो बहुत अच्छा होगा। बहुत अच्छा! हम पहले की तरह खेलेंगे।

जगदीश – और बहुत खुश होगें! इसलिए और भी खुश होंगे कि अब वे सब अपनी इच्छा से आएँगे (सोचकर) अपनी इच्छा से (हँसता है) अपनी आवश्यकता के कारण, इच्छा .....आवश्यकता! आवश्यकता.....इच्छा!(खूब हँसता है) भोला इन्सान.....

सुमन – ताऊजी, आप इतने क्यों हँसते हैं?

जगदीश – क्यों हँसता हूँ? तू भी हँस सुमन! तू भी हँस! दोनों हँसते है खूब हँस ! अब हम किसी एक के नहीं होंगे। एक दूसरे के होंगे .....एक दूसरे के.....

अभ्यास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मर्यादा' एकांकी में निहित है –
   (अ) सामाजिक आदर्श (ब) पारिवारिक आदर्श
   (स) सांस्कृतिक आदर्श (द) धार्मिक आदर्श
2. इनमें से किस ग्रन्थ में पारिवारिक मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण देखने को मिलता है –
   (अ) गीता (ब) रामायण (रामचरित मानस)
   (स) कामायनी (द) कठोपनिषद
3. संयुक्त परिवार की नींव है –
   (अ) सद्भाव और त्याग (ब) भाईचारा
   (स) परस्पर भावनाओं का सम्मान (द) उपर्युक्त सभी
4. परिवार चलता है –
   (अ) धन से (ब) परिश्रम से
   (स) सूझ–बूझ से (द) इन सबके सामंजस्य से
5. जोड़ी बनाइए –
   किसको किस चीज का घमंड था ?

जगदीश	डॉक्टर होने का
प्रदीप	सबसे अधिक कमाने का
विनय	सूझ–बूझ का
अशोक	परिश्रम का

6. सुमन जगदीश के घर किसलिए आई थी?
7. रीता अपने जेठ जी जगदीश के घर क्यों आई थी?
8. प्रदीप किस बात को कहने में शर्म अनुभव कर रहा था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सपना देखने से पहले जगदीश क्या सोचता था?
3. प्राचीन संयुक्त परिवार के सदस्य किस प्रकार रहते थे?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बिखरे हुए परिवार को फिर एक होने में कौन–सी घटनाएँ सहायक सिद्ध होती हैं?
2. एकांकी में उल्लेखित चौपाइयों के आधार पर रामचन्द्र जी और भरतजी को भेंट का वर्णन कीजिए।
3. ''अब हम किसी एक के नहीं रहेंगे एक–दूसरे के होंगे'' इस कथन के आधार पर संयुक्त परिवार की आधार शिला को स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नांकित गद्यांशों की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –

   (अ) अपना मन नहीं .....उनकी आन थी।

   (आ) आज के जमाने .....लेना नहीं चाहते।
5. इन पंक्तियों का भाव पल्लवन कीजिए –

   (अ) आज तो मर्यादाओं को फिर से पहचानना है।

   (आ) वह जमाना लद गया जब एक का हुक्म चलता था।

   (इ) कोई भी वस्तु अपने आप में सबकुछ नहीं हैं।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिए–

   गुलाम, खर्च, कोशिश, दुश्मन, चिट्ठी, औलाद, शर्म।
2. निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए–

   (अ) जिसे जीता न जा सके

   (आ) जिसके समान दूसरा न हो

   (इ) जो परिश्रम करने वाला हो

   (ई) जिसका कोई शुल्क न देना पड़े

(उ) जिस स्त्री का पति मर गया हो

(ऊ) जिसका बहुत प्रभाव हो

3. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम दिए गए हैं आप शब्द और उनके विलोम की सही जोड़ी बनाइए–

कठोर, गलत, कोमल, सही, सबल, सच, दुर्बल, खाद्य, उन्नति, अवनति, अखाद्य, झूठ।

ध्यान से पढ़िए –

संयुक्त परिवार एक आदर्श परिवार माना जाता है, जिसमें परिवार के अन्य सदस्यों की सुख सुविधा के लिए सदस्य को अपना मन मारना पड़ता है। जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाते हैं उनके परिवार शीघ्र ही तीन तेरह हो जाते हैं। वर्तमान परिवेश में संयुक्त परिवार के दिन लद गए हैं क्योंकि आज तो सब अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग अलापते हैं। वे एक दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुँचाने में भी नहीं चूकते हैं। सामंजस्य न होने पर जब परिवार बिखर जाता है तो बाद में पछिताते हैं। यह तो वही बात है– अब पछिताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

उपर्युक्त अनुच्छेद में रेखांकित मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है–

मुहावरे–

मन को मारना, तीन–तेरह होना, दिन लदना, ठेस पहुँचाना।

लोकोक्तियाँ –

अपनी–अपनी ढपली अपना–अपना राग।

अब पछिताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

अब समझिए–

मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाषा की शक्ति है इनके प्रयोग भाषा के सम्प्रेषण में सरलता और सौन्दर्य आ जाता है और वह प्रभावी बन जाती है।

लोकोक्ति– लोक+उक्ति से लोकोक्ति शब्द की रचना हुई है। जन साधारण में प्रचलित लोक प्रिय उक्ति/कथन को लोकोक्ति कहते हैं। इसका प्रयोग–उपालम्भ देने, व्यंग्य करने, मीठी चुटकी लेने या अपने कथन को प्रभावित करने के लिए किया जाता है।

मुहावरा–

मुहावरा–जब कोई वाक्यांश अपना असली अर्थ छोड़कर किसी लाक्षणिक अर्थ को व्यक्त करता है, तो उसे मुहावरे की संज्ञा दी जाती हैं मुहावरा जिस रूप में होता है उसी रूप में रहता है अन्यथा भाषा की प्रभावोत्पादकता समाप्त हो जाती है।

मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर –

1. लोकोक्ति पूर्ण होती है जबकि मुहावरा वाक्यांश होता है।
2. लोकोक्ति पूर्ण स्वतंत्र होती है, जबकि मुहावरा पूर्ण स्वतंत्र नहीं होता।
3. लोकोक्ति को अपना भाव प्रकट करने के लिए वाक्यांश की आवश्यकता नहीं, जबकि मुहावरा किसी वाक्य या वाक्यांश के जुड़कर अपना भाव प्रकट करता है।
4. लोकोक्ति में क्रिया कभी प्रारंभ में रहती है, कभी मध्य में आ जाती है और कभी अन्त में जबकि मुहावरे में यह अंत में होती है पर सभी मुहावरों में क्रिया आवश्यक नहीं है।

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, आम के आम गुठलियों के दाम, ऊँची दुकान फीका पकवान, खोदा पहाड़ निकली चुहिया, नाच न जाने आँगन टेड़ा।

5. निम्नलिखित गद्य पंक्तियों में यथा स्थान विराम–चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

(अ) जगदीश तीव्रता से बन्द करो चुप हो जाओ मैं एक को भी नहीं जाने दूँगा अभी नहीं जाने दूँगा देखूँगा कैसे कोई घर से दूर जाता है– कैसे

(आ) जगदीश और प्रकाश मंजू किशोर और इलाहबाद वाली ताई और सुबीर पप्पू कुणाल ये सब अच्छे नहीं हैं इन्हें तू प्यार नहीं करेगी

6. निम्नलिखित शब्द–युग्मों के सामने कुछ विकल्प दिए गए हैं, आप सही विकल्प का चयन कीजिए–

(क) कभी – कभी – (सामासिक पद, द्विरूक्ति)

(ख) माँ–बाप – (द्विरूक्ति, सामासिक पद)

(ग) सूझ–बूझ – (अपूर्ण पुनरूक्त शब्द, पूर्ण पुनरूक्त शब्द)

(घ) देखते–देखते – (अपूर्ण पुनरूक्त शब्द, पूर्णपुनरूक्त शब्द)

योग्यता विस्तार

1. अपने सहपाठियों के साथ इस एकांकी का मंचन कीजिए ।
2. 'विष्णु प्रभाकर' के अन्य एकांकी पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िए।
3. संयुक्त परिवार आज भी प्रांसगिक हैं। इस विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।
4. यदि आप घर के मुखिया हों तो अपने परिवार की सुख–शांति के लिए क्या करेंगे? लिखिए।

शब्दार्थ

पहरूए – पहरेदार **निः श्वास**– बहिर्मुख श्वास, लंबी श्वास, **ताड़ना** –डाँट फटकार, **सुभाय** –स्वभाव **कुबेर** – देवताओं के कोषाध्यक्ष, **कारूँ** – एक प्रसिद्ध राजा, मूसा का चचेरा भाई जो बहुत धनवान था पर बड़ा कंजूस था **मंजूषा** – पेटी **बिसराई**– भुलाई

***